International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

ग्रामीण बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में पारिवारिक वातावरण का प्रभावः एक अध्ययन

अनामिका, शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
डॉ. उषा शर्मा, सहायक आचार्य (गृहविज्ञान विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावित शोध का परिचयात्मक विश्लेषण

प्रत्येक व्यक्ति का समायोजन उसके व्यक्तित्व से निर्धारित होता है, बालकों के सफल समायोजन में भी व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण कार्य हैं, उन संस्कृतियों के बालकों के समायोजन में व्यक्तित्व का कार्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जो संस्कृतियॉ सरल की अपेक्षा जटिल है। विदेशी संस्कृतियों के प्रभाव के कारण अपने देश की संस्कृति भी दिन–प्रतिदिन जटिल होती जा रही है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वह अपने बालकों के व्यक्तित्व–विकास की ओर ध्यान दें, ताकि उनका समायोजन जीवन पर्यन्त सफल रहे और उनका जीवन आनन्दमय रहे।

व्यक्तित्व शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'परसोना' से हुई है, जिसका आशय 'आवरण' से है। प्राचीन ग्रीकवासी नाटकों में कार्य करते समय अपनी पहचान छिपाने तथा पात्रों की भूमिका के अनुरूप लगने के लिए आवरण धारण कर लिया करते थे, इस नाटकीय तकनीक को आगे चलकर रोमवासियों ने उपयोग करना आरम्भ कर दिया और वही से व्यक्तित्व की अवधारणा प्रतिस्थापित हुई मानी जाती है। इस प्रकार 'परसोना' का आशय इस बात से लिया जाने लगा कि कोई व्यक्ति कैसा दिखाई पड़ता है न कि वास्तव में वह कैसा है।

एस0टी0 जरसील्ड के अनुसार– "व्यक्ति के रूप में उसके लक्षणों, गुणों तथा योग्यताओं का योग ही व्यक्तित्व है जिसमें उसकी समायोजन स्थापित करने की जीवन शैली भी समाहित है।

व्यक्तित्व एक ऐसा तंत्र है जिसके मानसिक तथा शारीरिक दोनों ही पक्ष होते है। यह तंत्र ऐसे तत्वों का एक गठन होता है जो आपस में अन्तः क्रिया करते हैं। इस तंत्र के मुख्य तत्व शीलगुण, संवेग, आदत, ज्ञानशक्ति, नित्तप्रकृति, चरित्र, अभिप्रेरक आदि है जो सभी मानसिक गुण हैं परन्तु इन सबका आधार शारीरिक अर्थात व्यक्ति के ग्रन्थीय प्रक्रियाए एवं तंत्रिकीय प्रक्रियाएँ हैं। इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि व्यक्तित्व न तो पूर्णतः मानसिक है और न पूर्णतः शारीरिक ही होता है। व्यक्तित्व इन दोनों तरह के पक्षों का मिश्रण है।

गत्यात्मक संगठन से तात्पर्य यह होता है कि मनोशारीरिक तंत्र के भिन्न–भिन्न तत्व जैसे शीलगुण, आदत, आदि एक–दूसरे से इस तरह सम्बन्धित होकर संगठित है कि उन्हें एक–दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता है। इस संगठन में परिवर्तन सम्भव है। यही कारण है कि इसे एक गत्यात्मक संगठन कहा जाता है। इस तरह से गत्यात्मक संगठन से स्पष्ट मतलब यह है कि व्यक्तित्व के शीलगुण या अन्य तत्व आपस में इस तरह से संगठित होते है कि उनमें परिवर्तन भी होते रहते है।

व्यक्तित्व में व्यक्ति का व्यवहार एक समय से दूसरे समय में संगत होता है। संगतता से मतलब यह होता है कि व्यक्ति का व्यवहार दो भिन्न अवसरों पर भी लगभग एक समान होता है।

बालक–बालिकाओं में व्यक्तित्व का विकास : बालकों के व्यक्तित्व विकास में निम्न प्रक्रम प्रभावशाली होता है– संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास प्रक्रम की विशेष भूमिका होती हैं।

बालकों के जीवन में संवेगों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। संवेग से प्रेरित होकर बालक बड़े से बड़े कार्यो को करने के लिए प्रेरित हो जाता है। सामान्यतः बालकों में संवेग की प्रक्रिया काफी जटिल अवस्था होती है। जिसमें बालक भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में उद्दीपकों का प्रत्यक्षीकरण कर एक निष्कर्ष पर पहुँचता है।

बालक में सामाजिक गुणों का विकास भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में होता है। प्रारम्भ में सामाजिक विकास की गति तीव्र होती है। मध्य में विकास की गति में पठार आ जाता है तथा फिर मन्द गति से विकास होता है। स्वस्थ, सुन्दर और मानसिक गुणों से युक्त बालक के लिए आवश्यक है कि उसमें पर्याप्त मात्रा में सामाजिक मूल्य व गुण सम्मिलित हों।

बालक के व्यवहार पर शारीरिक विकास का गुणात्मक व मात्रात्मक प्रभाव पड़ता है। बालक के व्यवहार मे शारीरिक विकास दो प्रकार से प्रभावी हो सकता है। पहले प्रकार का प्रभाव प्रत्यक्ष होता है जिसमे यह निश्चित होता है कि बालक मे एक निश्चित आयु तक किस स्तर तक विकास हुआ है जबकि दूसरे प्रकार के अप्रत्यक्ष प्रभाव में बालक के अभिवृत्तियों का मापन होता है।

बालक के व्यक्तित्व विकास में परिवार के आर्थिक स्थिति का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। किसी बालक के विकास में परिवार की आर्थिक स्थिति संगति होने पर बालक में विकास सुसंगठित रूप

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in December 2024, ISSN -2393-8048

से होता है, जबकि पारिवारिक आर्थिक स्थिति असंगत होने पर बालक मे विकास सुव्यस्थित ढंग से नही हो पाता है।

व्यक्ति का विभिन्न जीवन की परिस्थितियों में प्रभाव पूर्ण समायोजन मुख्यतः मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आवश्यक है कि शरीर केवल शारीरिक रोगों से ही दूर या मुक्त न हो बल्कि मानसिक रोगों से भी मुक्त हो। व्यक्ति अपना प्रभावपूर्ण समायोजन तभी कर सकता है जब उसका शरीर शारीरिक और मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ्य और निरोग हो।

व्यक्तित्व विकास के विश्लेषण में व्यक्तित्व प्रतिमान के अन्तर्गत व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले आन्तरिक एवं बाहरी कारको का अध्ययन किया जाता है। जिसे दो घटकों में विभक्त किया गया है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

व्यक्तित्व लक्षण वास्तव में व्यवहार के विशिष्ट गुण से है। यह गुण आपस में समन्वित होते है कुछ व्यक्तित्व लक्षण अलग और होते है तथा कुछ शीलक्षण आपस में एक दूसरे के साथ संयुक्त होते है। यह संयुक्त लक्षण कहलाते है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि जब बालक में आत्म–प्रत्यय धनात्मक प्रकार होता है। तब बालक में निम्न लक्षण विकसित होते है–आत्म विश्वास, आत्म –गौरव, दूसरों के साथ सम्बन्धों को सही मूल्यांकन की योग्यता, स्वयं को वास्तविक रूप में देखने की योग्यता आदि। जब बालक में आत्म–प्रत्यय ऋणात्मक प्रकार का होता है। तब बालक में निम्न लक्षण विकसित होते है। अनिश्चयता की भावना, हीनता की भावना, अनुपयुक्तता, आत्मविश्वास का अभाव तथा निम्न आत्म गौरव। जब बालक में धनात्मक आत्म–प्रत्यय होता है। तब उसका जीवन विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन अच्छा, मधुर और आनन्ददायक होता है तथा ़णात्मक आत्म–प्रत्यय की दशा में उसका समायोजन दुर्बल और दुखः दायक होता है बालक के व्यक्तित्व प्रतिमान का विकास मुख्यतः वंशानुक्रम अधिगम और परिवारिक अनुभवों से अधिक सार्थक ढंग से प्रभावित होता है।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

भारत एक ग्राम प्रधान देश है, इस अध्ययन कि सहायता से हमें गाँवों में रहने वाले बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व व समायोजन के स्तर के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। जिससे उनके व्यक्तित्व के स्वरूप का पता चलेगा। प्रस्तुत विषय शोध हेतु अध्ययन प्रासंगिक है। हालॉकि कुछ अध्ययन इस विषय पर अवश्य हुए हैं, परन्तु शोधार्थी द्वारा कुछ ऐसे बिन्दुओं की पहचान की गई है जो या तो अध्ययन रहित है या बहुत कम अध्ययन किये जा सके हैं, साथ ही यह क्षेत्र इतना अधिक महत्वूपर्ण है कि इस विषय पर जितने ही शोध अध्ययन किये जायेगें, उतना ही यह विषय महत्वपूर्ण रूप से सामने आयेगा।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. ग्रामीण बालक–बालिकओं के व्यक्तित्व के विकास का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास पर इनके लिंग भिन्नता को प्रभाव का अध्ययन करना।
3. लिंग भेद भिन्नता के कारण समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

व्यक्तित्व लक्षण वास्तव में व्यवहार के विशिष्ट गुण से है। यह गुण आपस में समन्वित होते है कुछ व्यक्तित्व लक्षण अलग और होते है तथा कुछ शीलक्षण आपस में एक दूसरे के साथ संयुक्त होते है। यह संयुक्त लक्षण कहलाते है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि जब बालक में आत्म–प्रत्यय धनात्मक प्रकार होता है। तब बालक में निम्न लक्षण विकसित होते है–आत्म विश्वास, आत्म –गौरव, दूसरों के साथ सम्बन्धों को सही मूल्यांकन की योग्यता, स्वयं को वास्तविक रूप में देखने की योग्यता आदि। जब बालक में आत्म–प्रत्यय ऋणात्मक प्रकार का होता है। तब बालक में निम्न लक्षण विकसित होते है। अनिश्चयता की भावना, हीनता की भावना, अनुपयुक्तता, आत्मविश्वास का अभाव तथा निम्न आत्म गौरव। जब बालक में धनात्मक आत्म–प्रत्यय होता है। तब उसका जीवन विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन अच्छा, मधुर और आनन्ददायक होता है तथा ़णात्मक आत्म–प्रत्यय की दशा में उसका समायोजन दुर्बल और दुखः दायक होता है बालक के व्यक्तित्व प्रतिमान का विकास मुख्यतः वंशानुक्रम अधिगम और परिवारिक अनुभवों से अधिक सार्थक ढंग से प्रभावित होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- **Azeem, M. and Buch, E.(2009)** "A Study on Age and Gender Differences on the Factors Affecting High Academic Achievement", Indian Journal of Applied Psychology,

Vol.37, Madras, pp 31-39.

- **B.E. Hurlock**: Adolescent Development, McGraw Hill Ltd, London, 1974
- **Bafila, K. and Mehata, H.K. (2009)** “Trends in the Relationship between Socio-Economic Status and Academic Achievement”, JEL Classification, Vol. 62, No.12, Working Paper Series, 2009.
- **Bakshi, F., Kumar, J. and srivastava,G. (2009).** "Moving personality beyond the person-situation debate: The challenge and the opportunity of within-person variability". Current Directions in Psychological Science **13** (2): 83–87.
- **Baron (1993).** Psychology, p. 482
- **Baumrind, D. (1997).** Introduction to personality (Fourth ed.). New York: Longman. pp. 8–9. ISBN 0-673-99456-2.

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY